Jay Shankar Chaubey
jay.chaubey@azimpremjifoundation.org

प्राथमिक कक्षाओं में लिखना सिखाना

सार

बोलने की तरह लिखना भी अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। फिर भी बोलने की अपेक्षा लिखना अधिक कठिन काम है। लिखने की शुरूआती/यांत्रिक योग्यता प्राप्त कर लेने के बाद, लिखने वाले को यह सोचना पड़ता है कि हम क्या कहना चाहते हैं और कैसे प्रभावी ढंग से कहा जा सकता है। यानी अपने मन से कुछ लिखना, अपनी बातो को अर्थपूर्ण बनाने, विचारों को क्रमबद्ध और सुसंगत रूप से लिखने के लिये काफी ध्यान देने कि जरुरत होती है। लिखने की यही प्रक्रिया जीवन पर्यंत चलती रहती है जिस पर हम शुरू से ही कम ध्यान देते हैं और लिखने के यांत्रिक पक्ष पर ही सारी उर्जा लगा देते हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को लिखना सिखाने के परिदृश्य पर ग़ौर करें। स्कूल की प्रार्थना के बाद सभी बच्चे अपनी-अपनी कक्षा में बैठते हैं। बच्चों की उपस्थिति ली जाती है। स्कूल में एक शिक्षक और एक शिक्षिका हैं तथा एक अर्द्धशिक्षक भी हैं जिन्हें शिक्षा मित्र भी कहा जाता है। सभी पढ़ाने के पाबन्द हैं। बच्चों को कुछ न कुछ लिखने का काम ज़रुर देते हैं। कक्षा एक-दो के बच्चे एक साथ, कक्षा तीन-चार के बच्चे एक साथ और कक्षा पाँच के बच्चे बरामदे में बैठे हुए हैं। कक्षा एक-दो के लिये ब्लैक बोर्ड के आधे भाग में वर्णमाला आधे भाग में अमात्रिक शब्द लिख दिए गए हैं। बच्चे इन्हें अपनी कॉपी में उतार रहे हैं। तीसरी कक्षा के बच्चे हिंदी की किताब से सुलेख लिख रहे हैं। चौथी कक्षा के बच्चे पाठ के अभ्यास कार्य पूरा कर रहे हैं। अभ्यास कार्य में रिक्त स्थानों की पूर्ति, प्रश्नोत्तर, मिलान करना आदि अभ्यास हैं। पांचवी के बच्चे बरामदे में बैठे हैं। यहाँ प्रधानाध्यापक जी अपनी विभागीय काम करने के बाद एक पेज का श्रुत लेख स्पष्ट स्वरों में बोलते हैं तथा बाद में इसकी जाँच करते हैं। उसमें वर्तनी सुधार के शब्दों पर लाल घेरा बना कर वहाँ शुद्ध शब्द भी लिख देते हैं। जिसे बच्चों को अपनी कापी में सुधार कर पाँच-पाँच बार लिखने हैं। कुछ बच्चों की श्रुतलेख के समय सुन्दर लेख नहीं बन पाया था तो उन्हें अखबार से पैराग्राफ चुन कर लिखने का काम दिया गया। इधर दूसरी कक्षा के बच्चे बोर्ड पर लिखे सभी शब्द उतार चुके थे। प्राथमिक कक्षाओं में लिखना सिखाने के ये नियमित क्रियाकलाप लगभग सभी स्कूलों में देखने को मिल जाते हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को लिखना सिखाने के इस परिदृश्य को देखकर मन में सवाल यह उभरता है कि बच्चों को लिखना सिखाने का क्या मतलब है? क्या केवल ब्लैकबोर्ड से शब्द उतारना, श्रुतलेख लिखना, सुलेख लिखना, प्रश्नोत्तर लिखना, याद किए हुए निबंध या पत्र लिखने के अभ्यास आदि लिखने की श्रेणी में आते हैं? या लिखने को हम अर्थ निर्माण के रूप में देखते हैं। अपनी अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। आगे यह भी सवाल उभरता है किइस तरह लिखने का अभ्यास करने के उपरांत क्या बच्चे लिखना सीख जाते हैं? इसका उत्तर शायद 'नहीं' में है। हलांकि अभ्यासकार्य करना भी एक काम है। बच्चों को विविध अभ्यास के मौके मिलने चाहिए। जिसमें बच्चे कुछ सोच कर लिख रहें हों, न कि लिखे हुए को उतार रहे हों। इसी तरह देखे तो आगे की कक्षाओं में बच्चे केवल रटे-रटाए निबंध लिख पाते हैं। यदि उनसे यह कहा जाय कि अपने मन से कुछ लिखकर दिखाएं तो उन्हें काफी दिक्कतें आती हैं। लिखने के उक्त क्रियाकलापों से यह भी समझ में आता है कि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को अपने अनुभवों को व्यक्त करने के मौके प्रदान नहीं किए जाते।

वहाँ एक शिक्षक को यह स्पष्ट नहीं होता है कि वे बच्चों के लिखने में किन बातों पर गौर करें, किन चीजों

की जाँच करें। अक्सर जाँच का यह काम बच्चों के लेखन में वर्तनी सुधार या व्याकरण सुधार का काम बन जाता है जबकि जरुरी यह है कि बच्चों के लेखन में उनकी कल्पनाशीलता, उनकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति को समझने का प्रयास किया जाय तथा इसके नियमित रूप से मौके उन्हें दिए जाएं।

सर्वप्रथम हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि बच्चों को लिखना सिखाने का क्या उद्देश्य है? हम उन्हें लिखना क्यों सिखा रहे हैं? आगे यह भी सवाल उभरता है कि पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत आगे की कक्षाओं में बच्चे रटे-रटाए निबन्धों के अलावा अपने मन से कुछ क्यों नहीं लिख पाते? यह भी महसूस होता है कि हमारी प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को लिखना सिखाने का उद्देश्य बहुत हीं संकुचित अर्थों में लिया जाता है।बच्चे अपनी शुरूआती कक्षाओं में शब्दों – वाक्यों को उतारने का ही ज्यादा काम करते हैं जबकि लिखना सिखाने के वर्तमान सन्दर्भ में लिखना एक अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है। दूसरी बात लिखने का मतलब पढ़ने की भांति किसी सन्दर्भ में अर्थपूर्ण लिखने से है। यह एक प्रक्रिया है न कि उत्पाद।

जब बच्चे अपनी कॉपी पर गोजा-गाजी करते हैं, लाइनें खींचते हैं, चित्र बनाते हैं तो यह एक तरह से लिखने की शुरुआत है। इस दौरान बच्चों के आँख और हाथ का सामंजस्य भी दिन प्रतिदिन सुदृढ़ होता है। अतः शुरूआती दिनों में केवल अक्षर आकृतियों को सुन्दर ढंग से उकेरने पर जोर देने के साथ ही उक्त तरह के अन्य अभ्यास भी करवाए जा सकते हैं जो कि लिखना सीखने की शुरूआती प्रक्रिया का अंग हैं।

लिखने के द्वारा हम अपने विचारों, अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं। इसके मौके भी बच्चों को कक्षाओं मे देने चाहिए। स्कूल भ्रमण के दौरान कभी–कभी यह भी देखने को मिलता है कि कुछ शिक्षक बच्चों को अपने मन से लिखने का काम देते हैं जिसमें वे अपने अनुभवों या आस-पास की घटनाओं पर कुछ लिखते हैं। यहाँ एक स्कूल का उदाहरण साझा करना चाहेंगे। इस स्कूल में कक्षा पांच के कुल 15 बच्चे एक साथ बैठे हुए हैं। शिक्षिका ने एकलव्य प्रकाशन की एक किताब 'छुटकी उल्ली' हाथ में लेकर बच्चों को दिखाया। किताब का मुखपृष्ठ दिखाकर बातचीत शुरू की। चित्र में क्या-क्या बना हैं? चित्र दिन के हैं कि रात के? कहानी किसके बारे में होगी? आदि सहज सवालों के जरिये बच्चों से बात करना शुरू की। इसके बाद किताब का एक-एक पेज दिखाते हुए, इस पर बातचीत करते हुए कहानी ख़त्म हुई। कहानी के ख़त्म होने बाद भी शिक्षिका नें बच्चों से बातचीत की। इसके बाद शिक्षिका ने कहा कि इसी शीर्षक (कहानी का नाम) के आधार पर अपने मन से कहानी लिखने की कोशिश करिये। इस पर दो-तीन बच्चों ने कहा कि मैम किसी चित्र को देखकर लिखना चाह रहे हैं। मैम ने इसी कक्षा के अशोक विश्वास द्वारा बनाए चित्र को सभी बच्चों को दिखाया और चित्र के आधार पर अपने मन से लिखने का काम दिया। उदाहरण के रूप में चित्र व कहानी को देखें।

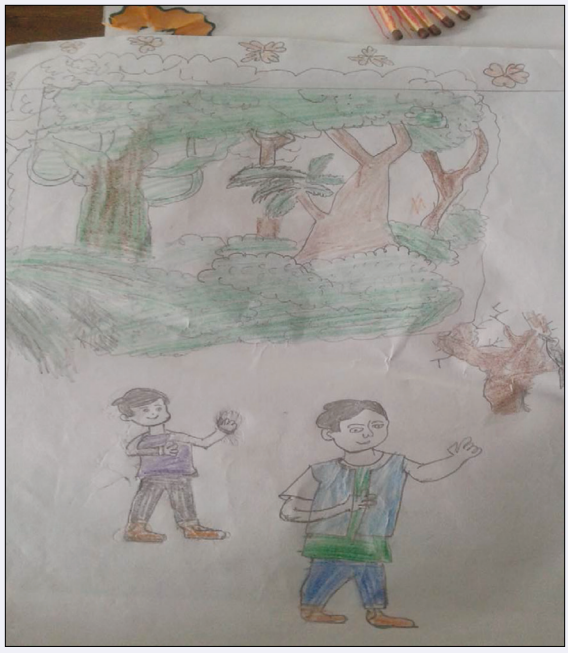

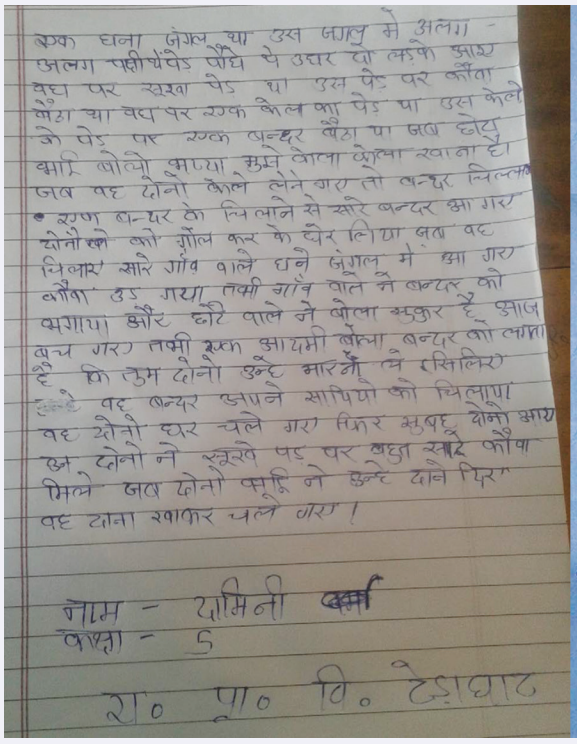

एक घना जंगल था उस जगल मे अलग-
अलग पक्षी पेड़ पौधे थे उधर दो लड़के आए
वृक्ष पर सूखा पेड़ था उस पेड़ पर कौवा
बैठा था वृक्ष पर एक केले का पेड़ था उस केले
के पेड़ पर एक बन्दर बैठा था जब छोटू
भाई बोलो भइया मुझे केला खाना है
जब वह दोनो केले लेने गए तो बन्दर चिल्लाया
एक बन्दर के चिलाने से सारे बन्दर आ गए
दोनो को गोल कर के घेर लिया जब वह
चिलाए सारे गाँव वाले घने जंगल मे आ गए
कौवा उड़ गया तभी गाँव वाले ने बन्दर को
भगाया और छोटे वाले ने बोला शुकर है आज
बच गए तभी एक आदमी बोला बन्दर को लगता
है कि तुम दोनो उन्हे मारोगे इसलिए
वह बन्दर अपने साथियो को चिलाया
वह दोनो घर चले गए फिर सुबह दोनो आए
उन दोनो ने सूखे पड़ पर बहुत सारे कौवा
मिले जब दोनो भूमि ने उन्हे दाने दिए
वह दाना खाकर चले गए।

नाम - यामिनी वर्मा
कक्षा - 5
रा० प्रा० वि० टेड़ाघाट

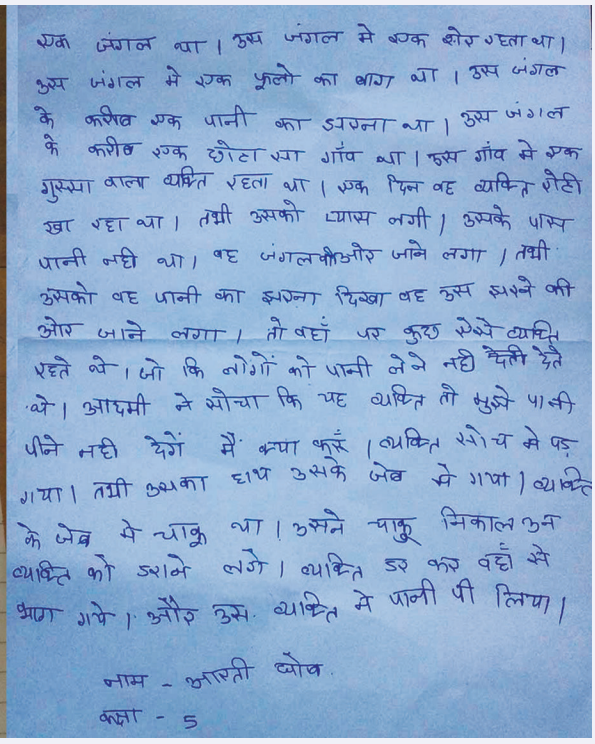

एक जंगल था। उस जंगल मे एक शेर रहता था।
उस जंगल मे एक फूलो का बाग था। उस जंगल
के करीब एक पानी का झरना था। उस जंगल
के करीब एक छोटा सा गाँव था। इस गाँव मे एक
गुस्सा वाला व्यक्ति रहता था। एक दिन वह व्यक्ति रोटी
खा रहा था। तभी उसको प्यास लगी। उसके पास
पानी नही था। वह जंगल की ओर जाने लगा। तभी
उसको वह पानी का झरना दिखा वह उस झरने की
ओर जाने लगा। तो वहाँ पर कुछ ऐसे व्यक्ति
रहते थे। जो कि लोगों को पानी लेने नही देते देते
थे। आदमी ने सोचा कि यह व्यक्ति तो मुझे पानी
पीने नही देगें मैं क्या करूँ। व्यक्ति सोच मे पड़
गया। तभी उसका हाथ उसके जेब मे गया। व्यक्ति
के जेब मे चाकू था। उसने चाकू निकाल उन
व्यक्ति को डराने लगे। व्यक्ति डर कर वहाँ से
भाग गये। और उस व्यक्ति ने पानी पी लिया।

नाम - आरती घोष
कक्षा - 5

कक्षा में बच्चों को लिखने के मौके देने के लिए कक्षा में बच्चों के स्तर के अनुरूप विभिन्न प्रकार की गतिविधियां करवाई जा सकती हैं जैसे कि पढ़े हुए शब्दों/नामों को लिख सकना, सुने हुए प्रश्नों का एक-दो वाक्यों में उत्तर लिख सकना, क्यों, कब, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख सकना, चित्र देख कर लिखना, अपने घर या परिवेश के अनुभव लिखना, डायरी लिखना, सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखना, अधूरी कहानी को पूरा करना आदि अभ्यास करवाए जा सकते हैं।इस प्रक्रिया में शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों के लेखन में उनकी कल्पनाशीलता व स्वाभाविक सोच को देखने का प्रयास किया जाए न कि केवल वर्तनी व व्याकरण को देखने का।

बच्चों को इस तरह नियमित रूप से लिखने के मौके देने से उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति का विकास होगा और हम सही मायने में बच्चों को लिखना सिखाने का काम कर रहे होंगे। इन बातों को ध्यान में रख कर यदि कक्षा में लिखना सिखाने का काम हो, तब शायद बच्चे रटे-रटाए निबंध से उबरकर अपने मन से लिखने की ओर अभिप्रेरित हो पाएंगे।